दोषम् =दोष को; **मित्रद्रोहे** =मित्रों से द्रोह करने में; **च** =भी; **पातकम्** =पाप को; **कथम्** =क्यों; **न** =नहीं; **ज्ञेयम्** =विचार करना चाहिए; **अस्माभिः** =हमें; **पापात्** =पाप से; **अस्मात्** =इस; **निवर्तितुम्** =हटने के लिए; **कुलक्षय** =कुलनाश; **कृतम्** =करने से (होने वाले); **दोषम्** =अपराध को; **प्रपश्यद्भिः** =जानने वाले; **जनार्दन** =हे कृष्ण।

अनुवाद

हे जनार्दन! यद्यपि लोभ से भ्रष्टचित्त हुए ये लोग कुल-नाश करने में अथवा मित्र-द्रोह में कोई दोष नहीं देखते, किन्तु उस पाप को जानने वाले हम इस कर्म में क्यों प्रवृत्त हों।।३७-३८।।

तात्पर्य

क्षत्रिय से यह आशा नहीं की जाती कि युद्ध अथवा द्यूत के लिए शत्रु-पक्ष के निमन्त्रण को वह अस्वीकार करे। इस नियमानुरूप, दुर्योधन के दल द्वारा युद्ध के लिए ललकारे जाने पर अर्जुन युद्ध से उपरत नहीं हो सकता। इस संदर्भ में, अर्जुन का उद्गार है कि यद्यपि शत्रुपक्ष ऐसी ललकार के परिणाम के प्रति अन्धा हो रहा है, पर इसके अशुभ परिणाम को देखता हुआ वह स्वयं तो इस चुनौती को स्वीकार नहीं कर सकता (कर्तव्य वस्तुतः तभी बाध्य कर सकता है, जब परिणाम मंगलमय हो; अन्यथा नहीं।) इन सभी परस्पर विरोधी तर्कों पर विचार कर अर्जुन ने युद्ध न करने का ही निश्चय किया।

कुलक्षये प्रणश्यन्ति कुलधर्माः सनातनाः।
धर्मे नष्टे कुलं कृत्स्नमधर्मोऽभिभवत्युत।।३९।।

कुलक्षये =कुल का नाश होने से; **प्रणश्यन्ति** =नष्ट हो जाते हैं; **कुलधर्माः** =कुलधर्म; **सनातनाः** =सनातन; **धर्मे** =धर्म के; **नष्टे** =नष्ट होने से; **कुलम्** =कुल पर; **कृत्स्नम्** =सम्पूर्ण; **अधर्मः** =अधर्म; **अभिभवति** =अधिकार कर लेता है; **उत** =ऐसा कहा जाता है।

अनुवाद

कुल का नाश होने से सनातन कुलधर्म नष्ट हो जाते हैं और इस प्रकार शेष कुल भी अधर्म में प्रवृत्त हो जाता है।।३९।।

तात्पर्य

वर्णाश्रम व्यवस्था में ऐसे अनेक परम्परागत धार्मिक नियम हैं, जो सम्पूर्ण कुल के अभ्युदय तथा दैवीगुण-प्राप्ति में सहायक सिद्ध होते हैं। कुल में जन्म से मृत्यु तक होने वाले इन शुद्धि कृत्यों का दायित्व वयोवृद्धों पर रहता है। वृद्धों की मृत्यु होने पर कुल के ऐसे पारम्परिक शुद्धि कर्म लुप्त हो सकते हैं। इससे यह आशंका रहती है कि शेष बचे तरुण अधर्ममय व्यसनों में प्रवृत्त होकर कहीं मुक्ति-लाभ से वंचित न रह जायें। अतएव किसी भी कारण से कुल के वयोवृद्धों का वध करना योग्य नहीं है।